एक खत प्यारी दादी जी के नाम

ब्र.कु.कल्पना...

मेरी मीठी प्यारी दादी जी,

आप जहां कहीं भी हो, हम जानते हैं आप हमें देख रहे हो और हमें सुन भी रहे हो।

आज आपके छठवें स्मृति दिवस के अवसर पर अपने दिल की आवाज को अक्षरों के साज पहनाकर इस खत के माध्यम से आप तक पहुंचाना चाहती हूँ।

दादी जी हमने जब मधुबन में कदम रखा और आपको देखा तो एक मिनट की दृष्टि और मुलाकात ने हमारे लौकिक के सारे बंधनों को एक सेकण्ड में तोड़ दिया। आपके अस्तिव में क्या करिश्माई जादू था कि उस दिन के बाद से आज तक लौकिक कभी याद न आया, मोह की रग वहां से टूटी और शुद्ध मोह के रूप में आया और आपके साथ जुड़े हुए ब्राह्मण परिवार के साथ जुड़ गई।

दादी उसके बाद से आपके संग रहकर हमने बहुत सारी बातें सीखी, आपसे हमने शक्ति का अहसास किया और आज भी कर रहे हैं।

जैसे ब्रह्मा बाबा को मधुबन के कण-कण में हमसूस किया जा सकता है वैसे ही आपको भी मधुबन के हर कण और हर मधुबन निवासियों के दिल में महसूस किया जा सकता है।

दादी आप कहती थी कि सम्मान, प्यार, खुशी देने से मिलती है। हमने अपने जीवन में उसका अनुभव किया। आप कहती थी ब्राह्मणों का जीवन उनकी दिनचर्या है जिसमें स्वत: एक अनुशासन है हम इसका भी अनुभव कर रहे हैं। दादी आप रोज क्लास में मुरली पढ़ती थी लेकिन उसके पहले आपने तीन बार मुरली पढ़ी होती थी। मुरली आपके दिलों दिमाग में उतरी होती थी, इसलिए आप की वाणी से निकले हुए मुरली के महावाक्य सीधे हमारे दिमाग से दिल तक पहुंच जाते थे। और जो बात दिल से लगती थी उसे जीवन में उतरने में देर न लगती थी। दादी आपको देखकर हरेक बहन को दिल से लगता था कि मुझे तो बदलना ही है। दादी अगर बाप समान बनी है तो मुझे भी बनना ही है।

दादी आपकी वाणी, दृष्टि और व्यक्तित्व में जो आकर्षण और प्यार था उस की ओर आकर्षित हुए बिना कोई भी बच नहीं सकता था। आपसे जो एक बार मिला वह एक मुलाकात उसके जीवन की धरोहर बन जाती थी। मुझे याद है हम जब मधुबन में रहने आये तो मुम्बई से आये और माउण्ट आबू की ठण्डी सहन नहीं होती थी तो आपने मुझे बलाकर खुद अपने हाथों से गरम कपड़े पहनाएं। एक माँ की तरह हर मधुबन निवासी को आपसे प्यार और दुलार मिलता रहा तो एक बाप की तरह आपने हरेक के सुविधा और आवश्यकता का ध्यान रखा। आप अनुभव और निर्णय की इतनी बड़ी ऑथोरिटी होते हुए भी हर बात में सभी मधुबन निसासियों की राय जरूर लेती थी। आप जो ऐसा सम्मान हमें देती थी जिससे हर एक को लगता था कि दादी के मुख से बात निकलने से पहले उसे हम पुरी करके ही दिखाएं। आप कहती भी थी कि मेरे मधुबन निवासी सभी राय बहादुर हैं लेकिन समय पर सेवा में हड्डी मेहनत करने में भी पीछे नहीं हटते। आप हम मधुबन की कुमारियों को इतना प्यार करती थी कि अगर एक दिन भी हम आपसे न मिले तो दूसरे दिन आप जरूर पुछती थी कि कल कहां थी? हम रोज रात्रि को गुडनाईट करने आपके कमरे में जमा होते थे आप सोने से पहले मुरली अवश्य पढ़ती थी और हमसे भी मुरली की प्वॉइंटस पर चर्चा करती। इस तरह हम न जाने कितनी बातें बातों ही बातों में सीख जाते थे। वह बातें और वह रोज की मुलाकाते दादी हम कभी नहीं भूल सकते। आज भी हमें वो समय याद है जब आपके साथ बारीश में झरना देखने जाते थे, पानी में खुब भींगना फिर गरम-गरम पकौड़े खाना, क्लास में बैठे-बैठे पहली बारीश की खुशी में आपका उसी समय गरम-गरम हलवा बनवाना और सबको खिलाना। हमें यह भी याद आता है कि जो भी मधुबन में आते थे उनसे यह पूछना कि आप सभी की तबियत ठीक है? सबको रहने का स्थान ठीक मिला है? किसी को कुछ सुविधा तो नहीं चाहिए, यदि कुछ चाहिए तो बोलो। आपकी वह प्यार भरी पूछताछ हम कभी नहीं भूल पायेंगे दादी।

दादी आपने हमारे दिल की बात सुनने के लिए हमेशा समय दिया, हमें समझा और चलाया। आज भी दादी उसी आधार पर हमें आगे बढ़ते रहने की शक्ति मिलती रहती है। आपने जब मुझे ज्ञानसरोवर सेवा में भेजा तो मुझे मधुबन (पाण्डव भवन) और आपकी याद में रोना आता था। उस समय ज्ञानसरोवर नया-नया बना था और अकेलापन महसूस होता था। एक दिन जब आपका फोन आया तो मेरा रोना छूट गया और मैंने कहा दादी आपकी बहुत याद आती है। उस समय आप 4 दिनों के लिए बेलगाम जा रही थी। आपने मुझे भी अपने साथ सेवा पर चलने को कहा था। और मैं आपके साथ ही बेलगाम गई। जब आपको यह पता चला कि यह मेरी पहली हवाई यात्रा है तब आपने बाजु में बैठकर हवाई जहाज के अंदर की एक-एक चीज दिखाकर परिचय कराया।

मैंने सोचा था कि मैं दादी के साथ जा रही हूँ और उनकी सेवा करूंगी, लेकिन मुझे सेवा का मौका तो नहीं मिला उल्टा आपने ही हर कदम पर मेरा ध्यान रखा। दादी जी आपको साकार रूप से हमारे बीच से गये 5 वर्ष ही हुए हैं लेकिन मधुबन का एक दिन भी ऐसा नहीं है जो आप याद न आये हो। यह मेरा अकेली का अनुभव नहीं है लेकिन यह हरेक ब्राह्मण, हरेक ब्रह्माकुमारी टीचर के दिल की आवाज है।

दादी आज भी हमें याद आता है आपका भट्ठी की बहनों को अपने हाथ से मक्खन-मानी खिलाना, दोपहर के भोजन के बाद आइस्क्रीम खिलाना, दोनों बाहें फैलाकर सभी बहनों को अपनी बाँहों में भर लेना। स्टेज पर बैठकर ही हरेक बहन को प्यार करना।

दादी हमें याद आता है कि बच्चों के प्रोग्राम में रात्रि 11 बजे भी बच्चों की जिद पर उनसे मिलना और टोली खिलाना। दादी न केवल आपका प्यार हमें याद आता है लेकिन आपके द्वारा कराई गई वह पावरफुल क्लासेज भी हमें याद आती है। चाहे कुमारियां हो या कुमार आप तो थी ही हमारी दादी कुमारका, तो आपने कुमार-कुमारियों को जो शक्तिशाली ज्ञान और धारणा की खुराक खिलाई है वो कोई कैसे भूल सकता है।

ऐसी एक न अनेक बातें याद करने जाओ तो पुरा भगवत लिखा जा सकता है। दादी आप जहां कहीं भी हैं हमारा दिल का याद-प्यार स्वीकार करना।

भदरवाह। स्वास्थ्य मंत्री गुलाम नबी आजाद से आध्यात्मिक चर्चा करने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.सुदर्शन।

निझामपुरा, बड़ौदा। 'प्लेटिनम जुबली महोत्सव' का उद्घाटन करते हुए ब.कु.डॉ.निरंजना, डेप्युटी मेयर हरजीवन परबडीया, ब्र.कु.कपीला, ब्र.कु.रीतेन, योगाचार्य हरिशश्रीधर वैद्य तथा अन्य।

राजापूर, गोवा। गंगातीर्थ पर 12 ज्योतिर्लिंगम झांकी का आध्यात्मिक रहस्य बताते हुए ब्र.कु.शोभा तथा अन्य।

दमण। 'अलविदा तनाव' शिविर का उद्घाटन करने के पश्चात् प्रभु-स्मृति में खड़े हैं सांसद लालुभाई पटेल, ब्र.कु.रंजन, ब्र.कु.कांता।

उत्तरकाशी। जिलाधिकारी डॉ.आर.राजेश कुमार को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.दीपक, ब्र.कु.श्रीराम एवं ब्र.कु.गीता।

भुवनेश्वर। उड़ीसा के मुख्य सचिव विजय कुमार पटनायक को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.गीता।